Government of Telangana

Department of Women Development & Child Welfare - Childline Foundation

When abused in or out of school.

To save the children from dangers and problems.

CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY

24 HOUR NATIONAL HELPLINE

When the children are denied school and compelled to work.

When the family members or relatives misbehave.

1098 (Ten...Nine...Eight) dial to free service facility.

VIII Class Hindi First Language

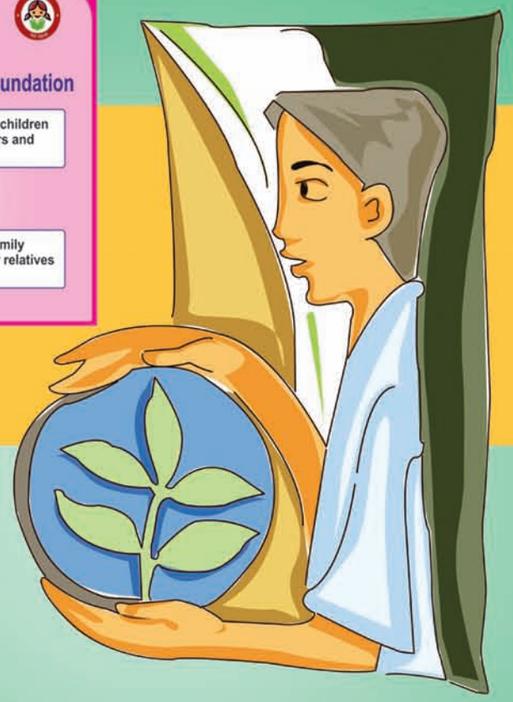

FREE

बाल-वसंत -3

कक्षा आठवीं

प्रथम भाषा हिंदी

Hindi First Language

VIII Class

तेलंगाणा राज्य सरकार
द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

SCERT TELANGANA

बच्चो! इन सूचनाओं पर ध्यान दीजिए...

* यह पाठ्यपुस्तक आप के स्तर और रुचियों के अनुरूप बनायी गयी है। इससे आप भाषा के सभी कौशलों का विकास कर सकते हैं। इसके लिए आप अध्यापक का मार्गदर्शन व सहयोग ले सकते हैं।
* पाठ व अभ्यास करने के लिए गाइड, सब्जेक्ट मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए। इनके अतिरिक्त 'शब्दकोश' का उपयोग करने से पाठ व अभ्यास आसानी से कर सकते हैं। इसके साथ-साथ समाचार पत्र, पुस्तकालय की पुस्तकें, बाल साहित्य आदि का पठन करना चाहिए, जिससे रचनात्मक व सारांशात्मक आकलन के उत्तर आसानी से लिख सकते हैं।
* हर पाठ के प्रारंभ में उन्मुखीकरण का चित्र दिया गया है। इस चित्र के माध्यम से आप सबसे पहले संज्ञा शब्दों, क्रिया शब्दों और सोच-विचार के वाक्यों द्वारा चर्चा करनी चाहिए ।
* हर पाठ में 'सुनिए-बोलिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर सोच-विचार के देने चाहिए। इन प्रश्नों के उत्तर विचारात्मक होने चाहिए। इससे आपकी बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
* हर पाठ में 'पढ़िए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर पाठ पढ़कर देने चाहिए। पढ़ो अभ्यास का उद्देश्य आपमें पढ़ने व अर्थग्राह्यता की क्षमता का विकास करना है।
* हर पाठ में 'लिखिए' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना चाहिए। इसे हम 'स्वरचना' भी कहते हैं। आपको अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करना चाहिए।
* हर पाठ में 'शब्द-भंडार' व 'भाषा की बात' के अभ्यास दिये गये हैं। इन अभ्यासों का हल समूहों में बैठकर करना चाहिए। आवश्यकतानुसार अध्यापक का सहयोग लेना चाहिए।
* 'परियोजना कार्य' स्वयं करके सीखने का कार्य है। इसे आप व्यक्तिगत या समूह में बैठकर करना चाहिए।
* हर पाठ में 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' अभ्यास के प्रश्न दिये गये हैं। आपको इन प्रश्नों के उत्तर मौखिक, लिखित अथवा प्रदर्शन (अभिनय) के रूप में देने चाहिए जिससे आप में भाषा का सृजनशील विकास होगा।
* स्वमूल्यांकन के लिए 'क्या मैं ये कर सकता हूँ?' शीर्षक से एक तालिका दी गयी है। आपको अपनी भाषाई क्षमता की जाँच स्वयं करनी चाहिए।

पाँव हैं नन्हें तुम्हारे
हलका तुम इन्हें न समझो।
सवालों के बादल पर चढ़कर
बूँदें तुम ज्ञान की चख लो।

अब शिक्षा है हर बच्चे का अधिकार।
क्योंकि अब आ गया है शिक्षा के क़ानून का अधिकार।।

SCERT

बाल-वसंत - 3

कक्षा - 8 हिंदी (प्रथम भाषा)

Class-8 Hindi (First Language)

संपादक

प्रो. टी.वी. कट्टीमनी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. शकुंतला रेड्डी
क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

प्रो. शुभदा वांजपे
हिंदी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

डॉ. अनीता गांगुली
असोसिएट प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद

सलाहकार

श्री सुवर्ण विनायक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हैदराबाद

डॉ. रमाकांत अग्निहोत्री
सेवानिवृत्त भाषाविद, भारतीय भाषा आधार पत्र संपादक, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

समन्वयक

डॉ. पी. शारदा
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हैदराबाद

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक, यू.पी.एस. याडारम, मेड्चल, रंगारेड्डी, तेलंगाणा

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक, जी.एच.एस. शंखेश्वर बाज़ार, सईदाबाद, हैदराबाद, तेलंगाणा

पाठ्यपुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्री ए. सत्यनारायण रेड्डी
निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हैदराबाद

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विभाग, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हैदराबाद

श्री बी. सुधाकर
निदेशक, सरकारी पाठ्यपुस्तक प्रेस, हैदराबाद

तेलंगाणा राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

विद्या से बढ़ें।
विनय से रहें।

क़ानून का आदर करें।
अधिकार प्राप्त करें।

SCERT TELANGANA

© Government of Telangana State, Hyderabad.

First Published 2013

New Impressions : 2014, 2015, 2017, 2018, 2019, 2020

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana State.

This Book has been printed on 70 G.S.M. SS Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by T.S. Government 2020-21

Printed in India
at the Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana State.

— o —

SCERT TELANGANA

आमुख

बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप से करते हैं। इस बात के अतिरिक्त व एन.सी.एफ-2005, आर.टी.ई-2009, ए.पी.एस.सी.एफ-2011 एवं आधार पत्र-2011 के सुझावों को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यपुस्तक का सृजन किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 सुझाती है कि बच्चों के जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने के प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये क़दम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सिखाने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह और समय की आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गयी सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नये ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों को अनदेखा किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सृजन और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनायें, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक़ का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हक़ीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव कराने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनःनिर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

पाठ्यपुस्तक के विकास एवं निर्माण हेतु प्रशिक्षण देने के लिए प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री तथा सुवर्ण विनायक और पाठों के चयन तथा सुझाव देने के लिए विद्या भवन सोसाइटी के विषय विशेषज्ञों को विशेष आभार प्रकट किया जाता है। एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हैदराबाद कृतज्ञता प्रकट करती है।

इस पाठ्यपुस्तक के विकास में अनेक विद्वतजनों का सहयोग प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्राप्त हुआ है। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। इस पाठ्यपुस्तक में जिन लेखकों और कवियों की रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं, उनके एवं उनके प्रकाशकों के प्रति परिषद आभार व्यक्त करती है। पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता में सुधार हेतु राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हैदराबाद आपके सुझावों का स्वागत करेगी।

निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
तेलंगाणा

SCERT TELANGANA

शिक्षक से...

- यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधार पर तैयार की गयी है। यह पारंपरिक भाषा-शिक्षण की कई सीमाओं से आगे जाती है। यह भाषा को विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है।
- पाठ्यक्रम के चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषाई विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है। इसके लिए भाषा-शिक्षण की प्रचलित परिधि से बाहर जाकर प्रकृति, समाज, विज्ञान, बाज़ार, इतिहास इत्यादि के प्रति विद्यार्थी को जिज्ञासु बनाने का प्रयास किया गया है, क्योंकि भाषा की भूमिका सर्वत्र है।
- हिंदी में अनेक बोली-भाषा और क्षेत्रीय प्रभावों का समावेश है। ये भाषा संसार के पोषक अंग हैं और धरोहर भी। इसलिए पाठों में आंचलिक पहचान के साथ लोक प्रचलित शब्द, मुहावरे, क्षेत्रीय परिवेश आदि का चित्रण है।
- पाठ्यपुस्तक के सोलह पाठों में विविध विषय तथा विधाएँ समाहित हैं। इनके अतिरिक्त केवल पढ़ने के लिए दी गई पठन सामग्री का उद्देश्य पाठ्यपुस्तक की सर्वांग आपूर्ति करना है।
- इस पाठ्यपुस्तक में मुद्रण एवं टंकण की दृष्टि से विविध प्रकार की प्रचलित पद्धतियों का प्रयोग किया गया है ताकि छात्र इनसे भी अवगत हो सकें।
- **कबीर की साखियाँ, सूर के पद** और **सुदामा चरित** जहाँ भक्तियुग के लोकप्रिय काव्य के उदाहरण हैं तो सुमित्रानंदन पंत की कविता **बरसते बादल**, रामनरेश त्रिपाठी की कविता **अरमान**, भगवतीचरण वर्मा की कविता **दीवानों की हस्ती** आधुनिक कविताएँ हैं। इनका उद्देश्य विद्यार्थियों में अन्य भाषाओं के साहित्य के प्रति रुचि एवं सद्भाव का विकास करना है।
- कबीर की साखियों में स्वबोध, सूर के पदों में वात्सल्य, 'सुदामा चरित' में मित्रता, 'बरसते बादल' में प्रकृति सौंदर्य व प्रेम, 'दीवानों की हस्ती' में देशप्रेम व उत्साह तथा 'अरमान' में सेवाभाव आदि मूलभाव निहित हैं।
- कहानियों में कामतानाथ की कहानी **लाख की चूड़ियाँ** शहरीकरण और औद्योगिक विकास से ग्रामोद्योगों के उजड़ने की पीड़ा को चित्रित करती है। यह कहानी नाते-नेह में रचे-बसे गाँवों के सहज संबंधों में बिखराव और सांस्कृतिक ह्रास के आर्थिक कारणों को स्पष्ट करती है। इस्मत चुगताई की कहानी **कामचोर** में ऊधम मचानेवाले बच्चों से होनेवाली परेशानी की रोचक प्रस्तुति है। कहानी **बाज और साँप** एक बोधकथा है जिसमें गहरा सामाजिक सरोकार है।
- सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की रचना **बस की यात्रा** यातायात की दुर्व्यवस्थाओं पर व्यंग्य करती है। अरविंद कुमार सिंह के निबंध **चिट्ठियों की अनूठी दुनिया** में संवाद माध्यमों की विकास यात्रा का रोचक विवरण है। ललित निबंधकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध **क्या निराश हुआ जाए** विभिन्न दुर्व्यवस्थाओं और चारित्रिक मूल्यों की गिरावट के बीच सकारात्मक तथ्यों को रेखांकित करता है। प्रदीप तिवारी के निबंध **जब सिनेमा ने बोलना सीखा** में भारतीय सिनेमा के इतिहास के एक महत्वपूर्ण पड़ाव को उजागर किया गया है। यह निबंध मूक सिनेमा के सवाक् सिनेमा में विकसित होने की कहानी बयान करता है जो शिक्षा की नज़र से भी अर्थवान है। सुप्रसिद्ध पत्रकार पी. साईनाथ की अंग्रेज़ी से अनूदित रपट **जहाँ पहिया है** में स्त्री-सशक्तीकरण का एक सजीव उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। रामचंद्र तिवारी का कथात्मक निबंध **पानी की कहानी** हिंदी में विज्ञान विषयक लेखन का एक उदाहरण है जिसमें पानी का मानवीकरण करते हुए उसकी विभिन्न अवस्थाओं का विवरण दिया गया है। 'केवल पढ़ने के लिए' में एक सामान्य व्यक्ति के अदम्य साहस और कार्य को रेखांकित करती रोचक जीवनी **पहाड़ से ऊँचा आदमी** है।
- विद्यार्थियों में शब्दकोश देखने की प्रवृत्ति का विकास करने व उनकी अर्थबोध संबंधी कठिनाई के निवारण हेतु पाठ्यपुस्तक के अंत में शब्दकोश दिया गया है।
- 160 शिक्षण कार्यदिवसों को दृष्टि में रखकर इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है।
- आकलन के लिए निरंतर समग्र मूल्यांकन प्रविधि का उपयोग किया जाए।
- पुस्तक में चार इकाइयाँ हैं। कुल सोलह पाठ हैं। प्रत्येक इकाई में चार-चार पाठ हैं। प्रत्येक इकाई के अध्ययन के दौरान एक-एक रचनात्मक आकलन हो। दो इकाइयों की समाप्ति पर एक संकलनात्मक/सत्र परीक्षा का आयोजन हो। प्रत्येक वर्ष में कुल दो संकलनात्मक/सत्र एवं चार रचनात्मक परीक्षाएँ आयोजित होंगी।

SCERT TELANGANA

- पाठ का अध्यापन करते समय 'प्रस्तावना प्रसंग' से 'क्या मैं ये कर सकता हूँ' तक समान महत्व दिया जाये। इन सभी अभ्यास कार्यों को छात्रों द्वारा ही करवाया जाये। अध्यापक केवल मार्गदर्शन करें।
- सभी बच्चों की सहभागिता का विशेष महत्व है। छात्रों की विविधता को ध्यान में रखते हुए उन्हें सहभागिता के अवसर मुहैया कराएँ। बच्चों को विविध संदर्भों के विषय में बातचीत के अवसर दें। उनसे प्रश्न पूछें। उन्हें भी प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें। व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों ही प्रकार की शिक्षण विधियों का प्रयोग करें जिससे छात्रों में सहभागिता एवं सहयोग की भावना का विकास हो।
- **प्रस्तावना प्रसंग** का शिक्षण में विशेष महत्व है। ये प्रत्येक पाठ के आरंभ में सचित्र दिये गये हैं। प्रस्तुत प्रस्तावना प्रसंग के प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों पर चर्चा करवाते हुए पाठ के शिक्षण का आरंभ करें। यह मौखिक होना चाहिए।
- प्रत्येक पाठ में **परियोजना** है। इसका उद्देश्य अर्जित ज्ञान को बाहरी परिवेश से जोड़कर उसका विस्तार करना है।
- **'क्या मैं ये कर सकता हूँ'** में बच्चा स्वयं अपना आकलन करे, जिससे वह अपने सीखने के विकास से अवगत हो सके। अध्यापक इससे उसके सीखने में आने वाले अवरोधों के विषय में जानकर सुधार के प्रयत्न कर सकते हैं।
- पाठ्यपुस्तक में अभ्यासों के उद्देश्य स्पष्ट करने हेतु अपेक्षित कौशलानुसार अभ्यास-कार्य दिए गए हैं। प्रत्येक अभ्यास क्रियाकलाप संबंधित कौशलों के विकास के साथ-साथ बालक को सोचने का अवसर प्रदान करता है। आठवीं कक्षा में अपेक्षित कौशलों को सात बिंदुओं में विभाजित किया गया है जो निम्नलिखित हैं-

सुनिए-बोलिए- इस कौशल का उद्देश्य बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करना है। यह अभिव्यक्ति बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न कि रटी रटाई। अतः इस कौशल के अभ्यास में पाठ के संदर्भों पर बालक को विविध दृष्टिकोणों से सोचने और अपनी बात कहने का मौका मिले।

पढ़िए- इस कौशल का उद्देश्य विद्यार्थियों को पाठ बार-बार पढ़ने के लिए प्रेरित करना है जिससे वे पाठ को बेहतर समझ सकें, साथ ही वाचन कौशल का विकास भी हो। ध्यान रहे कि वाचन से अभिप्राय है- भाव समझते हुए पढ़ना।

लिखिए- इसके अंतर्गत बच्चों की लिखित अभिव्यक्ति के विकास पर ध्यान दिया जाए। यह अभिव्यक्ति भी बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न कि रटी रटाई। इसमें बच्चे के स्वलेखन की झलक हो। बच्चा जो कुछ भी किसी तत्व के बारे में जानता हो उसे वह अपने शब्दों में शुद्ध, मौलिक व सुव्यवस्थित रूप में लिख सके।

शब्द भंडार- इसका उद्देश्य शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि के संदर्भोचित प्रयोग की योग्यता का विकास करना है।

भाषा की बात- इसका उद्देश्य छात्रों को भाषा संबंधी नियमों के बारे में जानकारी देते हुए उनमें भाषिक संरचना की समझ का विकास करना है।

प्रशंसा- इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि बच्चा जो कुछ सीख रहा है उसके सामाजिक एवं नैतिक उपयोग व महत्व को समझ सके। ज्ञान के सटीक व संदर्भोचित सामाजिक उपयोग करने की योग्यता उत्पन्न करना इस कौशल का उद्देश्य है। वह प्राप्त ज्ञान के महत्व को समझते हुए उस ज्ञान के प्रति प्रशंसा का भाव रख सके।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति- बच्चों में कल्पनात्मक अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न दक्षताएँ निहित होती हैं। उन्हें अपने विचार मौखिक तथा लिखित रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। वे अपनी खुद की कहानियाँ, गीत, संवाद, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचनाएँ, विज्ञापन, नाटक आदि का सृजन कर सकें। पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, चर्चा, भाषण आदि बच्चों के सृजनात्मक अभिव्यक्ति को इंगित करते हैं।

शिक्षकों से आशा है कि वे पाठ्यपुस्तक के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करेंगे और आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं करवाएँगे। परिषद पुस्तक के परिष्कार हेतु आपके सुझावों का सदैव स्वागत करेगी।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनी
पुल्ल कुसुमिता द्रुमदल शोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदेमातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।
परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।
गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम वतन हैं, हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इक़बाल

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्तियाँ (LEARNING OUTCOMES)

हिंदी (HINDI FL)

कक्षा - आठ (Class-VIII)

बच्चे–

- विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं, जैसे-पाठ्यपुस्तक में किसी पक्षी के बारे में पढ़कर पक्षियों पर लिखी गई सालिम अली की किताब पढ़कर चर्चा करते हैं।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट, ब्लॉग पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी, राय निष्कर्ष आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते/सुनाते हैं।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक/सांकेतिक भाषा में बताते हैं।
- विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों जैसे-जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति-रिवाजों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते हैं, जैसे-अपने मोहल्लों के लोगों से त्योहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना।
- किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं, जैसे-अपने आस-पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं- रामू काका की बेटी स्कूल क्यों नहीं जाती?
- विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे कहानी, कविता, लेख, रिपोर्ताज, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यपुस्तक की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष विषयों को खोजते हैं।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।
- कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे- वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि।
- विभिन्न पठन सामग्रियों को पढ़ते हुए उनके शिल्प की सराहना करते हैं और अपने स्तरानुकूल मौखिक, लिखित, ब्रेल/सांकेतिक रूप में उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हैं।
- किसी पाठ्यपुस्तक को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे-शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं।
- पढ़ने और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते /अभिव्यक्त हैं।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं।
- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे-कविता के शब्दों को बदलकर अर्थ और लय को समझना।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे-स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फ़िर अपने गाँव के मेले के दुकानदारों से बातचीत।
- अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। लेखन ने विविध तरीकों से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं, जैसे-सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि।
- विविध कलाओं, जैसे-हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा (रजिस्टर) का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं, जैसे-कला के बीज बोना, मनमोहक मुद्राएँ, रस की अनुभूति।
- अभिव्यक्ति की विविध शैलियों/रूपों को पहचानते हैं, स्वयं लिखते हैं, जैसे- कविता, कहानी, निबंध आदि।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

सहभागी गण

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक,
यू.पी.एस याडारम, मेड्चल,
रंगारेड्डी, तेलंगाणा राज्य

डॉ. सैयद एम.एम. वजाहत
राज्य हिंदी संसाधक,
जी.एच.एस. शंखेश्वर बाज़ार,
सईदाबाद, तेलंगाणा राज्य

डॉ. शेख़ अब्दुल ग़नी
पाठशाला सहायक हिंदी,, एस.आर.जी.,
जी.एच.एस. (जूनियर कॉलेज़),
भुवनगिरि, नलगोंडा

सुश्री ऋतु भसीन
राज्य हिंदी संसाधक,
यू.पी.एस दोड्डि अलवाल,
मलकाजगिरि, रंगारेड्डी

श्री मोहम्मद सुलेमान अली 'आदिल'
राज्य हिंदी संसाधक, तेलंगाणा राज्य

श्रीमती जी. किरण
राज्य हिंदी संसाधक
जी. एच. एस. फॉर डेफ एंड डम,
मलकपेट, हैदराबाद

श्रीमती जयश्री लोहारेकर
जी.एच.एस. काचीगुड़ा,
हैदराबाद

डॉ. एम. गोपीनाथ
जेड.पी.एच.एस. कुरुपम,
विजयनगरम, आंध्र प्रदेश

चित्रांकन

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास
जेड.पी.एच.एस. कुरमेड, नलगोंडा

के. रघुवीर गौड़
डाइट, करीमनगर

ले आउट & डिज़ाइन - श्री कुर्रा सुरेश बाबू एम.ए., एम.फिल., बी.टेक.

SCERT TELANGANA

विषय सूची

इकाई	क्र. सं.	पाठ का नाम	विधा	माह	पृष्ठ सं.
I.	1.	बरसते बादल	कविता	जून	01
	2.	लाख की चूड़ियाँ	कहानी	जून	07
	3.	बस की यात्रा	व्यंग्य	जुलाई	14
	4.	दीवानों की हस्ती	कविता	जुलाई	21
	उपवाचक	खेल जहाँ, मैदान वहाँ	कहानी	जुलाई	27
II.	5.	चिट्ठियों की अनूठी दुनिया	निबंध	अगस्त	31
	6.	अरमान	कविता	अगस्त	38
	7.	कामचोर	कहानी	सितंबर	42
	8.	क्या निराश हुआ जाए	निबंध	सितंबर	50
	उपवाचक	थैंक्यू निकुंभ सर	कहानी	सितंबर	57
III.	9.	कबीर की साखियाँ	कविता	अक्तूबर	60
	10.	जब सिनेमा ने बोलना सीखा	निबंध	अक्तूबर	64
	उपवाचक	दो कलाकार	कहानी	अक्तूबर	70
	11.	सुदामा चरित	कविता	नवंबर	74
	12.	जहाँ पहिया है	रिपोर्ताज	नवंबर	79
IV.	13.	पानी की कहानी	निबंध	दिसंबर	87
	14.	हमारा संकल्प	एकांकी	दिसंबर	96
	15.	सूरदास के पद	कविता	जनवरी	102
	16.	बाज और साँप	कहानी	फरवरी	106
	उपवाचक	पहाड़ से ऊँचा आदमी	कहानी	फरवरी	113
		शब्दकोश			115

SCERT TELANGANA

इस पाठ्यपुस्तक द्वारा अपेक्षित दक्षताएँ

सुनना-बोलना

- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज, आत्मकथा आदि में कही गई बातें अपने शब्दों में बता सकेंगे। उनके बारे में चर्चा कर सकेंगे।
- ज्ञात विषय के बारे में चर्चा कर सकेंगे। उसके पक्ष-विपक्ष में अपना मत रख सकेंगे।
- संदर्भानुसार बातचीत कर सकेंगे। अपने विचार क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।

पढ़ना

- अपने स्तर की कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि का उचित आरोहावरोह के सस्वर वाचन कर सकेंगे।
- अपने स्तर की कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि का मौनवाचन कर सकेंगे।
- अपने स्तर की कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि पढ़कर उसका भाव समझ सकेंगे। भाव स्पष्ट कर सकेंगे। समान भाव की अपठित सामग्री पढ़कर तुलना कर सकेंगे।
- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकालय की पुस्तकें आदि पढ़ने में रुचि लेंगे।

लिखना

- ज्ञात विषय के बारे में लिख सकेंगे। अपने विचार क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी रूप से लिख सकेंगे।
- पढ़े व सुने हुए विषय (पद्य व गद्य) का सार लिख सकेंगे।
- पढ़े व सुने हुए विषय (पद्य व गद्य) का विस्तार व व्याख्या लिख सकेंगे।
- अपने लेखन में विराम-चिह्नों का समुचित प्रयोग कर सकेंगे।
- बिना किसी वर्तनी दोष के अपने विचार लिख सकेंगे।

शब्द-भंडार

- परिचित शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का संदर्भोचित प्रयोग कर सकेंगे।
- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज आदि में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का अर्थ समझ सकेंगे।

भाषा की बात

- विशेषण-विशेष्य, विशेषण के भेद, संज्ञा के भेद, शब्द के रूप परिवर्तन, कारक विभक्तियाँ, शब्द शक्तियों के व्यावहारिक प्रयोग, मुहावरे, प्रयोजन विशेष से बनने वाले शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, स्वरदीर्घ संधि, संज्ञा और उनके विशेषण रूप, द्वंद्व समास, अतिशयोक्ति अलंकार, क्रियाओं से भाववाचक संज्ञा बनाना आदि भाषिक तत्वों के प्रयोग समझ सकेंगे।

प्रशंसा

- स्वबोध, वात्सल्य, मित्रता, आशावादी चेतना, देशप्रेम, सेवाभाव, कर्मठता, घरेलू उद्योग, ग्रामीण परिवेश, भारतीय संस्कृति, बचपन, साहस, सहयोग, मानवता, भाषा, महिला जागरूकता, पर्यावरण, विज्ञान आदि का सामाजिक एवं नैतिक महत्व समझ सकेंगे। अर्जित ज्ञान का महत्व समझते हुए उसके प्रति प्रशंसा का भाव रख सकेंगे।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- कविता, कहानी, गीत, संवाद, निबंध, व्यंग्य, आत्मकथा, पत्र-लेखन, सूचना, विज्ञापन, एकांकी, रिपोर्ताज, सूक्ति वाक्य आदि रचने का प्रयास कर सकेंगे।
- कविताओं का गायन, भाषण, पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, साक्षात्कार आदि क्रियाकलाप कर सकेंगे।

SCERT TELANGANA